सामाजिक परिवर्तन (Social Change)

सामाजिक परिवर्तन से तात्पर्य सामाजिक संबंधों में परिवर्तन से होता है। सामाजिक संबंध में परिवर्तन से तात्पर्य सामाजिक प्रक्रियाएँ, सामाजिक पैटर्न, सामाजिक मूल्य, सामाजिक मानक आदि में परिवर्तन से होता है। ऐसे परिवर्तन महत्वपूर्ण एवं विस्तृत प्रकृति के होते हैं, जो पूरे समाज को प्रभावित करते हैं। Fisher (1983) ने सामाजिक परिवर्तन को परिभाषित करते हुए कहा है, "समाज के सामाजिक संरचना में, यानि समाज में प्रचलित मूल्यों, मानकों, भूमिकाओं तथा अन्य इसी तरह के तत्वों जिनसे होकर एक सहज के मूल अवस्था की अभिव्यक्ति होती है, परिवर्तन को सामाजिक परिवर्तन कहा जाता है।"

Jones (1968) के अनुसार "सामाजिक परिवर्तन एक ऐसा पद है जिससे तात्पर्य सामाजिक प्रक्रियाओं, सामाजिक पैटर्नों, सामाजिक अन्तःक्रिया, सामाजिक संगठन के किसी पहलू में होने वाले परिमार्जन या विभिन्नता से होता है।"

विभिन्न परिभाषाओं के विश्लेषण से समाजशास्त्रियों एवं समाज मनोवैज्ञानिकों ने सामाजिक परिवर्तन के मूल स्वरूप के बारे में निम्नांकित तथ्यों को स्पष्ट किया है—

→ सामाजिक परिवर्तन मूलतः समाज के सामाजिक संबंधों में परिवर्तन की ओर संकेत करता है।

→ सामाजिक परिवर्तन में यह जरूरी नहीं है कि समाज के प्रत्येक व्यक्तियों द्वारा स्वीकृत मूल्यों, भूमिकाओं तथा मानकों में परिवर्तन आये। उसके लिए आवश्यक यह होता है कि समाज के अधिकतर व्यक्ति समाज के पुराने मूल्यों, भूमिकाओं एवं मानकों में परिवर्तन करके उसे स्वीकार करते हों।

→ सामाजिक परिवर्तन इस तरह से मूलतः व्यक्तियों की जिंदगी के पैटर्न एवं मूल्यों में विस्तृत परिवर्तन होता है।